पाठ 13. राजा जीत गया

इस पाठ का उद्देश्य मकड़ी के माध्यम से बच्चों को जीवन में निराश न होने की सीख देना और प्रयत्न के महत्व को बताना है। मकड़ी ने बार-बार गिरने पर भी प्रयास नहीं छोड़ा। अंततः वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो गई। राजा का सैनिकों को इकट्ठा कर जीत हासिल करना – इस उदाहरण से बच्चे एकता की शक्ति को पहचानेंगे।

पाठ की भूमिका

जब भी हम कोई काम शुरू करते हैं तो आवश्यक नहीं कि वह काम जल्दी ही हमसे हो जाए। किसी सफलता तक पहुँचने के लिए केवल एक ही प्रयत्न काफ़ी नहीं होता। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए लगातार प्रयत्न की आवश्यकता होती है। जो लोग मुश्किलों से हारते नहीं व लगातार मेहनत करते हैं वे अपने लक्ष्य पर अवश्य पहुँच जाते हैं। प्रस्तुत कहानी में राजा को लगातार व कठिन परिश्रम की शिक्षा एक मकड़ी से मिलती है जो बार-बार दीवार से गिरने पर भी ऊपर चढ़ने का प्रयास नहीं छोड़ती और अंततः सफलता प्राप्त करती है।

पाठ का परिचय

एक राजा था। वह वीर और साहसी था। एक बार वह युद्ध में शत्रुओं से हार गया। सैनिकों के मारे जाने व भाग जाने पर उसने एक गुफ़ा में शरण ली। निराश और दुखी राजा ने गुफ़ा में देखा कि एक मकड़ी ने कई बार दीवार पर चढ़ने की कोशिश की, लेकिन हर बार फिसलकर गिर जाती। परंतु फिर भी मकड़ी ने ऊपर चढ़ने का प्रयत्न नहीं छोड़ा। अंत में वह अपने लक्ष्य पर पहुँच गई। यह देख राजा ने सीखा कि बार-बार प्रयत्न करने से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

बार-बार अभ्यास करने से और प्रयत्न करने पर कोई भी काम मुश्किल नहीं रहता। बड़े-से-बड़े काम भी कठिन परिश्रम से आसान हो जाते हैं। मंज़िल को पाने के लिए मन में से निराशा को हटाकर आशा का संचार करना चाहिए, तभी सफलता निश्चित है।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पाठ का आदर्श वाचन करें। सभी बच्चों से एक-एक कर कहानी की कुछ पंक्तियाँ पढ़वाएँ। वाचन के दौरान उनसे प्रश्न भी पूछें। जैसे – राजा कैसा था? युद्ध का क्या परिणाम हुआ था? राजा के सैनिकों का क्या हुआ? इस तरह के वाचन से बच्चों के दिमाग में कहानी पूरी तरह बैठ जाएगी।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- राजा की तरह निराश होकर बैठने से क्या होता है?
- परिश्रम करने से क्या लाभ हो सकते हैं?
- क्या लगातार प्रयत्न से मंज़िल को प्राप्त किया जा सकता है?